उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स

UTTARAKHAND EXAM NOTES

उत्तराखण्ड पीसीएस **(PCS)**, उत्तराखण्ड लोअर पीसीएस **(PCS)**, समीक्षा अधिकारी, प्रवक्ता, एल0 टी0, उत्तराखण्ड वन दरोगा, उत्तराखण्ड समूह ग, उत्तराखण्ड कांस्टेबल एंव दरोगा, आबकारी एंव प्रवर्तन सिपाही, उत्तराखण्ड हाईकोर्ट क्लर्क। हमारे द्वारा सभी प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित ऑनलाइन तथा ऑफलाइन हस्तलिखित नोट्स उपलब्ध कराये जाते हैं।

सतपाल चौहान

ADDRESS: L-58 MDDA COMPLEX CLOCK TOWER DEHRADUN UTTARAKHAND
PH: 7579431731, 9411385738, E-MAIL: uttarakhandexamnotes@gmail.com
WEBSITE:- www.uttarakhandexamnotes.com
Facebook Page: https://www.facebook.com/UTTARAKHANDEXAMNOTES/

1

गढ़वाल में पंवार वंश :-

कनकपाल :- चांदपुरगढ़ी में पंवार राजवंश के संस्थापक।

- पंवार वंश के प्रथम शासक।

अजयपाल :- पंवार वंश का 37वां राजा।

- पंवार वंश का वास्तविक संस्थापक।
- अजयपाल का शासनकाल 1500 से 1547 ई० तक रहा था।
- अजयपाल जिस समय चांदपुरगढ़ी के विस्तार में प्रयासरत था उसी समय कुमाऊँ का चंद शासक कीर्ति चंद भी अपने राज्य विस्तार में प्रयत्नशील था।
- कीर्ति चंद ने गढ़वाल के कुछ क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था।
- बाद में कीर्ति चंद ने गढ़वाल नरेश के साथ संधि कर उसका राज्य वापस लौटा दिया था।

(सत्यपाल चौहान)

- पैनखण्डा के जुमला गढ़पति :-

- यह 4-3 या 4-2 स्वतन्त्र राजा थे।
- सभी राज्य तिब्बत के सीमावर्ती क्षेत्र से लगे हुये थे।
- अजयपाल ने इन राजाओं को पराजित कर दिया था।

Satpal Chauhan

- अजयपाल ने मंदाकिनी उपत्यका के शासक सत्पाण के गढ़पति व उपूगढ़ का कफ्फू चौहान तथा गढ़तांग के गढ़पति को पराजित किया था।

SATPAL CHAUHAN

राजधानी :-

- अजयपाल से पूर्व पवांर शासको की राजधानी चाँदपुर गढ़ी में थी।
- कुमाऊँ नरेश कीर्ति चंद से पराजित होने पर पवांर शासकों ने अपनी राजधानी देवलगढ़ स्थानांतरित की।
- 1512 ई० में अजयपाल ने अपनी राजधानी देवलगढ़ से श्रीनगर परिवर्तित की। जो 1804 तक रही।
- श्रीनगर राजधानी परिवर्तन का मूल कारण समतल भूमि व गढ़राज्य का केन्द्र स्थल था।
- चांदपुरगढ़ी (I) ⟶ देवलगढ़ (II) ⟶ श्रीनगर (III)

- सतपाल चौहान

Uttarakhand Exam Notes
9411385738, 7579431731

निर्माण कार्य :- SATPAL CHAUHAN

3

- अजयपाल द्वारा श्रीनगर में विशाल राज प्रासाद का निर्माण गढ़ी के रूप में किया गया था।
- इसके तीन प्रमुख मुख्य भाग थे।
- दरवाजे पर कलाकृतियाँ संजोयी गई थी।
- निर्माण में पत्थरों का ही प्रयोग किया गया था।
- 1803 के भूकम्प मे इस विरासत का अस्तित्व समाप्त हो गया।
- अजयपाल नाथ पंथी था गढ़वाल के प्राचीन सांवरी ग्रंथो में उसे आदिनाथ के नाम से सम्बोधित किया गया है।
- अजयपाल ने सरोला (ब्राह्मण जाति) व्यवस्था की स्थापना की।
- 52 गढ़ो को मिलाकर उसका एकीकरण किया था।

सतपाल चौहान

NOTE ⇒ गढ़वाल मे सरोला उच्च ब्राह्मण की एक सभा थी। जिसकी स्थापना 1904 ई० मे तारादत्त गैरोला ने की थी।

Uttarakhand Exam Notes
9411385738, 7579431731

बलभद्र शाह :-

- बलभद्र शाह का शासनकाल 1581 ई० से 1590 ई० माना गया है।

- बलभद्र शाह के समय दिल्ली में अकबर का शासन तथा कुमाऊँ में रुद्र चंद का शासन तथा कत्यूर क्षेत्र में सुखाल देव राज्य कर रहा था।

- बलभद्र शाह के समय की प्रमुख घटना रुद्र चंद द्वारा गढ़राज्य पर आक्रमण करना था।
  - इस युद्ध को बघागमण युद्ध के नाम से जाना जाता है। — 1591 ई०
  - इस युद्ध मे रुद्र चंद ने अपना सेनापति पुरुषोतम पंत को भेजा था जो इस युद्ध में शहीद हो गये।
  - इस युद्ध मे रुद्र चंद की सेना पराजित हुई थी तथा बलभद्र शाह विजयी रहा।
  - इस युद्ध मे प्रमुख भूमिका कत्यूर राजा सुखाल देव की रही परंतु युद्ध के पश्चात् गढ़राजा सुखाल देव को भूल गया।
  - रुद्र चंद ने सुखाल देव पर आक्रमण कर उसे मार डाला तथा कत्यूर राज्य को अपने राज्य में मिला लिया।

Satpal Chauhan
9411385738

Uttarakhand Exam Notes 5

मानशाह :-

- इनका शासन काल 1591 ई० से 1611 ई० तक।
- मानशाह ने तिब्बत से होने वाले आक्रमणों का सफलता पूर्वक सामना किया।
- डोपा के शासक को पराजित कर गढ़ जनता के कष्टों को मुक्ति दिलाई।
- कुमाऊँ नरेश लक्ष्मी चंद द्वारा बार-बार आक्रमण किये गये।
- लक्ष्मी चंद द्वारा 8वीं बार 1605 में आक्रमण करने के पश्चात खतड़वा पर्व मनाया गया।

Satpal Chauhan

सतपाल चौहान

श्यामशाह :-

- इनका राज्यकाल 1611 ई० से 1631 ई० माना जाता है।
- जहांगीर नामा में इनका उल्लेख सीरी नगर के जमींदार श्याम सिंह के रूप में किया गया है।
- श्यामशाह सन् 1621 ई० में जहांगीर के दरबार में उपस्थित हुआ था।
- सन् 1621 ई० में जहांगीर हरिद्वार भी आया था।

सतपाल चौहान 6

महिपतिशाह:-

- महिपतिशाह 48 साल की उम्र मे ~~महिपतिशाह~~ पृथ्वीशाह का उत्तराधिकारी बना।
- महिपतिशाह ने अपने सेनापति माधोसिंह भण्डारी को बिशडर आक्रमण हेतु भेजा जहा उनकी मृत्यु हो गयी।
- सतलज तट पर माधोसिंह भण्डारी वीरगति को प्राप्त हुये।
- महिपतिशाह ने कुमाऊँ शासक त्रिमलचंद को आश्रय देने के साथ ही राजा बनने मे मदद की थी।

सतपाल चौहान

रानी कर्णावती:-

- रानी कर्णावती का शासनकाल 1634 ई० से 1640 तक रहा।
- इतिहास मे यह "नाक कटी रानी" के नाम से प्रसिद्ध है।
- महिपतिशाह की मृत्यु के बाद अपने नाबालिग बेटे पृथ्वीपति शाह की संरक्षिका बनी।
- इनके शासन काल मे शाहजहाँ के कहने पर नवाजत खां ने श्रीनगर गढ़वाल पर आक्रमण किया परंतु रानी कर्णावती ने उन्हे पराजित कर दिया।
- रानी कर्णावती की तुलना गोण्डवाना की

रानी दुर्गावती से की जाती है।

• रानी कर्णावती ने मवालस्थ्यू महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया, देहरादून में तालाब व नहरों का निर्माण, पीने के पानी की व्यवस्था तथा वर्तमान कर्णपुर नगर की स्थापना की।

सतपाल चौहान

उत्तराखंड एक्जाम नोट्स
सतपाल चौहान
9411385738,
7579431731

पृथ्वीपति शाह :-

- पृथ्वीपति शाह ने अपने दरबार में दारा शिकोह के पुत्र शहजादा सुलेमान शिकोह को शरण दी थी।
- पृथ्वीपति शाह ने सुलेमान शिकोह को औरंगजेब को सौंपने से मना कर दिया था।
- परंतु पृथ्वीपति शाह के उत्तराधिकारी व पुत्र मेदनीशाह ने सुलेमान शिकोह को औरंगजेब को सौंप दिया।
- पृथ्वीपति शाह ने मेदनीशाह को उत्तराधिकार से वंचित कर दिया। फलतः मेदनीशाह को अपना जीवन मुगल दरबार मे बिताते हुये 1661 ई० मे वही उसकी मृत्यु हो गयी।
- पृथ्वीपति शाह ने दून पर आक्रमण कर वहां पृथ्वीपुर नगर की स्थापना की।

Uttarakhand Exam Notes
Satpal Chauhan
9411385738,
7579431731

फतेहशाह :-

• फतेहशाह के बारे मे जानने के स्रोत :- गुरु गोविंद सिंह का विचित्र नाटक से लेकर मौलाराम कृत गढ़राज्य वंश काव्य आदि।

• फतेहशाह के समय कुमाऊँ का शासक उद्योत चंद ने गढ़राज्य पर आक्रमण कर बधाणगढ़ जीत लिया।

• फतेहशाह ने सिरमौर नरेश मेदिनी प्रकाश को पराजित कर बैराटगढ़ व कालसीगढ़ पर अधिकार कर लिया तथा पौंवटा पर भी आक्रमण किया था

• फतेहशाह तथा सिरमौर शासक मेदिनी प्रकाश के बीच मध्यस्थता मुगल बादशाह औरंगजेब ने की थी।

• फतेहशाह के समय 1675 ई० मे औरंगजेब के दूत गुरु रामराय धामीनगर पहुँचे थे।

• फतेहशाह ने गुरु रामराय को खुडबुडा, राजपुर व चामास्तरी तीन गांव मंदिर हेतु दान दिये थे।

• 1699 ई० मे चंदशासक ज्ञानचंद ने युद्ध कर बधाणगढ़ की लूटपाट में नन्दा देवी की सोने की मूर्ति उठा लाया।

- 1709 में जगत चंद ने श्रीनगर जीत कर एक ब्राह्मण को दान दे दिया था।
- फतेहशाह के दरबार में पुरिया नैथानी जैसा मशहूर राज्याधिकारी, कुशल राजनीतिज्ञ, जन हितैषी मौजूद थे।
- मुगल सम्राट अकबर के समान नवरत्न थे।

प्रदीपशाह :-

- प्रदीपशाह नाबालिक था जिसके कारण उसकी माँ ने राज्य किया था जिस काल को गढ़वाल में रानी राज के नाम से जाना जाता है।

जैकीर्ति शाह :-

- आंतरिक कलह के कारण जैकीर्ति शाह ने देव प्रयाग के रघुनाथ मंदिर में प्राण त्याग दिये थे।

Uttarakhand Exam Notes
Satpal Chauhan
9411385738, 7579431731

Satpal Chauhan

प्रद्युम्नशाह :-

- 1785 ई० मे जैकीर्ति शाह की मृत्यु के समय प्रद्युम्न शाह कुमाऊँ में प्रद्युम्न चंद के नाम से राज्य चला रहा था।
- प्रद्युम्नशाह का सौतेला भाई पराक्रमशाह भी गढ़वाल का शासक बनना चाहता था।
- 1786 ई० में दून पर रोहिला गुलाम कादिर द्वारा आधिपत्य स्थापित कर लिया गया था।
- इस समय दून का फौजदार उम्मेदसिंह था।
- 1801 ई० मे दून पर लूटपाट हेतु मराठो का आक्रमण हुआ था।
- सन 1794 व 1795 मे गढ़वाल मे अन्ना काल पड़ा। (सतपुल चौमास)
- 1803 मे गढ़वाल पर गोरखो का आक्रमण हुआ तथा प्रद्युम्नशाह को सहारनपुर के राजपूत गुर्जरो के वहां शरण लेनी पड़ी।
- 1804 मे खुड़बुड़ा के युद्ध में प्रद्युम्नशाह वीरगति को प्राप्त हो गये।
- प्रीतमशाह को बंदी बनाकर नेपाल भेज दिया गया।
- पराक्रम शाह भागकर कांगड़ा नरेश की शरण में चला गया।

• सुदर्शन शाह ब्रिटिश साम्राज्य अर्थात् हरियाणा चला गया।

SATPAL CHAUHAN
9411385738, 7579431731

राजनीतिक व्यवस्था :-

• पंवार सत्ता की पूर्ण शक्तियां राजा के हाथो मे थी। इसलिए इन्हे 'बोलन्दा बदरीनाथ' की संज्ञा दी गयी थी। अर्थात् बदरीनाथ के समान राजा।

• वजीर या मुस्तार :- राजा के बाद प्रमुख पद।

• दफ्तरी मुख्यतः राजस्व विभाग का प्रमुख था।

• दीवान पंवार शासको के आय-व्यय का प्रमुख अधिकारी।

• वकील :- अन्य राज्यो से वार्ता का कार्य।

• लेखवार :- राजाज्ञा व ताम्रपत्र लिखने का कार्य।

• गोलदार :- राजधानी की सुरक्षा करना।

• थोकदार :- अपने क्षेत्र से राजस्व वसूलना।

प्रधान :- ग्रामीणों से राजस्व वसूलकर चौकदार को सौंपना होता था।

चण्ड :- संदेशवाहक।

रौंत :- ताम्रपत्रों के माध्यम से राजा द्वारा सैनिकों को रौंत (जागीर) दी जाती थी जिस पर राजस्व नहीं लिया जाता था।

औंताली :- थात या पट्टियों में बसे लोगों से प्राप्त होने वाला राजस्व।

सतपाल चौहान

Uttarakhand Exam Notes
SATPAL CHAUHAN
9411385738,
7579431731

राज्य में स्वतन्त्रता आंदोलन :-

- डिबेटिंग क्लब :- 1870 ई०
  - स्थान → अल्मोड़ा
  - उद्देश्य :- राजनीतिक चेतना बढ़ाने हेतु।

- हैप्पी क्लब :- 1903 ई०
  - → पं. गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा।
  - → राजनैतिक चेतना के विस्तार हेतु।

- अल्मोड़ा कांग्रेस
  - स्थापना :- 1912 ई०
  - उद्देश्य :- राजनीतिक चेतना के विस्तार हेतु।

- होम रूल लीग :-
  - स्थापना :- 1914 ई०
  - संस्थापक :- विक्टर मोहन जोशी।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

REDMI NOTE 8 PRO

→ बद्रीदत्त पाण्डे।
→ चिरंजीलाल।
→ हेम-चंद।

कुमाऊँ परिषद

(सतपाल शौकीन)

स्थापना :- 1916 ई०

संस्थापक :- ब० गोविन्द वल्लभ पंत, हरगोविन्द पंत, बद्रीदत्त पाण्डेय।

उद्देश्य :- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व शैक्षणिक समस्याओं पर विचार करने हेतु।

1926 ई० मे कुमाऊँ परिषद का कॉंग्रेस मे विलय कर दिया गया।

गढ़वाल कांग्रेस

स्थापना :- 1918 ई०

संस्थापक :- बैरिस्टर मुकुन्दीलाल तथा अनुसूया प्रसाद बहुगुणा।

UTTARAKHAND GK NOTES

गाँधी आश्रम

स्थापना :- 1937 ई०

संस्थापक :- शांतिलाल त्रिवेदी

स्थान :- चनौदा, सोमेश्वर (अल्मोड़ा)

लक्ष्मी आश्रम

स्थान :- कौसानी (बागेश्वर)

संस्थापक :- हाइलामन (सरलाबहन)

अल्मोड़ा अखबार ⇒ 1871 ई०

सम्पादक :- बुद्धि बल्लभ पंत।

स्थान :- अल्मोड़ा।

शक्ति समाचार पत्र :- सितम्बर 1918 ई०

सम्पादक :- बद्रीदत्त पाण्डे

अवधि :- साप्ताहिक

UTTARAKHAND EXAM NOTES

"गढ़वाली मासिक पत्रिका" ...

वर्ष :- 1905 ई०।

स्थान :- देहरादून।

संपादक :- पं. गिरिजादत्त नैथानी।

कर्मभूमि ⇒ वर्ष - 1939 ई०

संपादक :- भक्तदर्शन और भैरवदत्त।

स्थान :- लैंसडाउन (पौड़ी)

युववाणी :- 1941 ई० सतपाल महाराज

स्थान :- देहरादून।

प्रजामण्डल :- 1939 ई० (देहरादून)

:- टिहरी आंदोलन हेतु।

गढ़देश सेवा संघ :- 1938 ई०

स्थान :- दिल्ली

उद्देश्य :- पृथक राज्य की मांग हेतु।

संस्थापक :- श्री देव सुमन

UTTARAKHAND EXAM NOTES

वर्तमान नाम :- "हिमालय सेवा संघ"

"पर्वतीय विकास जन समिति"

स्थापना :- 1950 ई०।

उद्देश्य :- हिमाचल और उत्तराखण्ड को मिलाकर एक बृहद हिमालय राज्य का निर्माण करना।

पर्वतीय राज्य परिषद :-

स्थापना :- 1967 ई०

स्थान :- रामनगर

अध्यक्ष :- दया कृष्ण पाण्डेय।

उत्तराखण्ड क्रांति दल :-

स्थापना :- 25 जुलाई 1979 ई०

स्थान :- मसूरी

अध्यक्ष :- डॉ० देवीदत्त पंत।

उद्देश्य :- 8 पर्वतीय जिलो को मिलाकर एक राज्य गठित करना।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

उत्तराखण्ड :- तथ्य

अक्षांशीय स्थिति :- उत्तरी अक्षांश 28°43' से 31°27' तक

अक्षांशीय विस्तार :- 2° 44'।

देशान्तरीय स्थिति :- पूर्वी देशांतर 77°34' से 88°02' तक।

देशान्तरीय विस्तार :- 3°28'।

राज्य की लम्बाई पूरब - प० - 358 KM
राज्य की लम्बाई उत्तर - द० - 320 KM

राज्य की देश में स्थिति :- उत्तर-पश्चिम

राज्य की हिमालय में स्थिति :- पश्चिमी मध्य हिमालय।

राज्य का आकार :- आयताकार।

राज्य का क्षेत्रफल देश के संदर्भ में :-
53,483 वर्ग किमी०
(1.69%)

क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का स्थान → 19 वाँ।

UTTARAKHAND GK NOTES

- सर्वाधिक एवं सबसे कम क्षेत्रफल वाले जिले :- ~~चमोली~~ उत्तरकाशी व चम्पावत

- सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले जिले घटते क्रम में :-
  - → ~~चमोली~~ उत्तरकाशी
  - → ~~उत्तरकाशी~~ चमोली
  - → पिथौरागढ़
  - → पौड़ी

- सबसे कम क्षेत्रफल वाले जिले :-
  - → चम्पावत।
  - → रुद्र प्रयाग।
  - → बागेश्वर।
  - → हरिद्वार।

- उत्तर प्रदेश से सर्वाधिक व सबसे कम सीमा रेखा वाले जिले :- ऊधम सिंह नगर व नैनीताल।

- मसूरी मध्य हिमालय श्रेणी में स्थित है।

- सर्वाधिक ऊँचाई वाली 4 चोटियाँ :-
  1- नंदादेवी
  2- कामेट
  3- नन्दादेवी पूर्वी
  4- माणा

- फूलों की घाटी वृहद हिमालय में स्थित है।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

• राज्य में सर्वाधिक शीतकालीन वर्षा वाले क्षेत्र :- 1. पौड़ी।
2. टिहरी।
3. अल्मोड़ा।
4. देहरादून।

• सर्वाधिक तापमान वाला क्षेत्र बाह्य हिमालय के दक्षिणी ढाल से तराई तक का क्षेत्र।

☆ चमोली व तिब्बत के बीच स्थित दर्रे :-

1. नीति दर्रा।
2. किंगरी-बिंगरी दर्रा।
3. माणा या इंगरीला दर्रा।
4. बालचा दर्रा।
5. शलशल दर्रा।
6. कोई-भ्युंडार दर्रा।
7. चोरहोती दर्रा।
8. लमलंग दर्रा।
9. धाटरालिया दर्रा।

सतपाल सैनी

☆ पिथौरागढ़ व तिब्बत के मध्य स्थित दर्रे :-

1. लिपु लेख।
2. गुंगी।
3. टारमा।
4. नवीदुरा।
5. मानसरा-लम्पिया

किंगरी-बिंगरी - P+T
[According to Rajendra Prasad Baloch]

UTTARAKHAND EXAM NOTES

* उत्तरकाशी व तिब्बत के मध्य स्थित दर्रे

1. बागला दर्रा।
2. मुलिंमला।
3. नेलंग।
4. सागचोकला।

* चमोली व पिथौरागढ़ के मध्य स्थित दर्रे :-

1. लाटू धुरा।
2. टोपि धुंगा।
3. मार्च थोक।
4. बारा होती।

* उत्तरकाशी तथा हिमाचल के मध्य स्थित दर्रे।

1. श्रृंगकंठ।

* पिथौरागढ़ व चम्पावत के बीच स्थित दर्रा।

1. लासपा।

* पिथौरागढ़ व बागेश्वर के बीच स्थित दर्रा।

1. ट्रेल पास।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

उत्तराखण्ड ऐतिहासिक

लाखु गुफा
लेखाम
पेटशाल
→ अल्मोड़ा

ग्वारख्या गुफा.
किमनी गांव गुफा
मलारी गांव गुफा
→ चमोली

* मलारी गांव से 5.2 किलो सोने का मुखौटा प्राप्त हुआ है।

हुडली → (उत्तरकाशी)
→ नीले रंग के शैल चित्र की प्राप्ति

बनकोट : → (पिथौरागढ़)
→ 8 ताम्र मानवकृतियो।

फलसीमा → (अल्मोड़ा)
→ शैल चित्र में योग मुद्रा में मानव का चित्रण।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

कसार देवी :→ अल्मोड़ा।
→ शैल चित्र में 14 नर्तकों का सुन्दर चित्रण।

* ऋग्वेद में उत्तराखण्ड क्षेत्र के लिए "देवभूमि एवं मनीषियों की पूर्ण भूमि" कहा गया है।

* ऐतरेय ब्राह्मण मे उत्तराखण्ड के लिए "उत्तर-कुरु राज्य" प्रयुक्त किया गया है।

* स्कन्द पुराण मे उत्तराखण्ड की सर्वाधिक चर्चा है। इसमे उत्तराखण्ड को मानस खण्ड और केदारखण्ड नाम दिया गया है। (सतपाल चौहान)

* पुराणो मे मानसखण्ड तथा केदारखण्ड के संयुक्त क्षेत्र को "उत्तरखण्ड, ब्रह्मपुर एवं खसदेश" कहा गया है।

* पालि भाषा के बौद्ध साहित्य मे उत्तराखण्ड को "हिमवंत" कहा गया है।

* गढ़वाल क्षेत्र का प्राचीन नाम:- बदरिकाश्रम क्षेत्र, तपोभूमि एवं केदारखण्ड

UTTARAKHAND EXAM NOTES

* बाणासुर की राजधानी :- ज्योतिषपुर

* गढ़वाल क्षेत्र में खस जातियों के समय बौद्ध धर्म का अधिक प्रसार हुआ।

* कुमाऊँ क्षेत्र का सर्वाधिक उल्लेख 'स्कन्ध-पुराण' में है।

* कुमाऊँ क्षेत्र में किरात, किन्नर, यक्ष, गन्धर्व, विद्याधर, नाग आदि जातियों के निवास करने का उल्लेख ब्रह्मा एवं वायु पुराण में मिलता है।

* किरात, किन्नर, यक्ष, तंगव, कुलिंद, खस जातियों के निवास का उल्लेख महाभारत में मिलता है।

जागेश्वर देवी मंदिर :- अल्मोड़ा।
↳ यहां से यक्षों के निवास होने की पुष्टि हुयी है।

* कुमाऊँ क्षेत्र में बौद्ध धर्म का प्रसार खसों के समय हुआ था।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

* अल्मोड़ा की मुद्राओ पर कुणिन्द शासको के नाम :- 1. आसेक।
2. गोमित्र।
3. हरदत्त।
4. शिवदत्त।

* त्रिशुल लेख → गोपेश्वर, बाड़ाहाट

* पाण्डुकेश्वर ताम्रपत्र, कण्डारा ताम्रपत्र, चम्पावत ताम्रपत्र, बैजनाथ ताम्रपत्र → कार्तिकेयपुर राजाओ
सलपाल यौलन

* उत्तराखण्ड पर शासन करने वाली प्रथम राजनीतिक शक्ति :- कुणिन्द

* उत्तराखण्ड पर शासन करने वाली शक्तियाँ :- 1. कुणिन्द।
2. शाक।
3. कुषाण।
4. कन्नौज के मौखरि (6वी शताब्दी)
5. वर्धन वंश।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

* ह्वेनसांग → पो-लि-हि-मो-पु-लो (ब्रह्मपुर) (उत्तराखण्ड)
→ मो-यू-लो (मयूरपुर) हरिद्वार (20 ली०)

* उत्तराखण्ड पर शासन करने वाली प्रथम ऐतिहासिक शक्ति कार्तिकेयपुर राजवंश था।

* कार्तिकेयपुर राजवंश :- (300 वर्ष तक शासन) (700ई से 1050ई० तक)

राजधानी :- चमोली के कार्तिकेयपुर।
:- बागेश्वर के बैजनाथ।

राजभाषा :- संस्कृत।

* कार्तिकेयपुर राजवंश के समय उत्तराखण्ड में आदिगुरु शंकराचार्य का पदार्पण हुआ।

* कार्तिकेयपुर राजवंश (परिवार) :-

प्रथम परिवार :- 1. बसन्तदेव
2. खर्परदेव वंश
3. निम्बरवंश (शैव मत)

UTTARAKHAND EXAM NOTES

* जागेश्वर मे नवदुर्गा, महिषमर्दिनी, लकुलीश व नटराज आदि मंदिरो का निर्माण इष्टगण ने किया था।

* बैजनाथ मंदिर का निर्माण भूदेव ने किया

⇒ कार्तिकेयपुर राजाओ के बाद मध्यकाल मे कुमाऊँ क्षेत्र पर कत्यूरियों का शासन रहा।

* कत्यूरी वंश मे आसंतिदेव वंश की राजधानी पहले जोशीमठ (चमोली) बाद मे रणचुला कोट।

* आसंतिदेव वंश का अंतिम शासक ब्रहदेव (रतपाल पौराणी) था जिसके समय तैमूर लंग ने हरिद्वार पर आक्रमण किया था।

⇒ कत्यूरि राज वंश के बाद कुमाऊँ पर चंद वंश का शासन स्थापित हुआ।

* 1216 ई० मे कत्यूरियो की सत्ता समाप्त कर चंद वंश की स्थापना की गई।

↳ प्रथम शासन - थोहर चंद या
↳ सोम चंद
(Open university study bouy)

UTTARAKHAND EXAM NOTES

कुमाऊँ पर शासन करने वाले राज वंश :-

1. कुणिन्द (प्रथम राजनीतिक शक्ति)
2. शक
3. कुषाण
4. कन्नौज के मौखरि
5. वर्धन वंश
6. कार्तिकेयपुर वंश (प्रथम ऐतिहासिक शक्ति
7. कत्यूरि राज वंश।
8. चंद वंश।

चंद वंश :-

संस्थापक :- थोहर चंद (वाणी प्रकाशन)

:- सोमचंद वास्तविक संस्थापक वर्तमान चंपावत मे चंद वंश की स्थापना।

→ सोम चंद ने चंपावत को राजधानी बनाया।

→ सोमचंद ने "चार आल" को नियुक्त किया था।

→ कत्यूरि शासक ब्रह्मदेव ने अपनी बेटी का विवाह सोम चंद के साथ कर दिया।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

- सोम-चंद इलाहाबाद के निकट झूसी या प्रतिष्ठानपुर का निवासी था।
- सोम-चंद ने चंपावत में राजबुंगा किले का निर्माण करवाया।

दान चंद :-

- दान चंद दिल्ली में बादशाह ~~मुहम्मद~~ फिरोज शाह ~~बिन तुगलक~~ तुगलक के दरबार में गया था।
- ~~मुहम्मद बिन तुगलक~~ FST ने दानचंद को 'गरुड़' की उपाधि प्रदान की थी।
- दान-चंद का प्रमुख सेनापति नीलू कठायत था।

सतपाल चौहान

कीर्ति-चंद :-

- कीर्ति चंद ने गढ़वाल के शासक अजयपाल को युद्ध में पराजित किया था।

UTTARAKHAND PEXAM NOTES

भीष्म चंद :-

- अल्मोड़ा जिले में खगमरा किले का निर्माण।

बालो कल्याण चंद :-

- राजधानी चंपावत से अल्मोड़ा स्थानांतरित की।
- अल्मोड़ा का प्राचीन नाम आलम नगर था।
- 1563 ई० मे राजधानी स्थानांतरित की गई थी।

रूद्र चंद :-

- मुगलशासक अकबर ने चौरासी माल (तराई- भाभर) का फरमान व खिल्लत प्रदान की।
- रूद्र-चंद ने रूद्रपुर नगर की स्थापना की थी।

UTTARAKHAND EXAM NOTES

लक्ष्मी चंद :-

- लक्ष्मी चंद को "लखुली बिराली" अर्थात् दिखने वाली बिल्ली नाम से जाना जाता है।

- लक्ष्मी चंद मुगल शासक जहाँगीर के दरबार मे दो बार उपस्थित हुआ था।
- सर्व प्रथम 1612 ई० में पुनः 1620 ई० में इसका उल्लेख जहांगीर नामा मे भी मिलता है।

☆ चंद राजाओं का राज चिन्ह गाय थी।

कुमाऊँ के किले

1. राजबुंगा - चंपावत - राजा सोम चंद
2. मल्ला महल - अल्मोड़ा - कल्याण चंद रूद्र चंद
3. बाणासूर - चंपावत - बाणा सूर दैत्य
4. खगमरा कोट - अल्मोड़ा - भीष्म चंद।
5. लालमण्डी (फोर्ट मोयरा) - अल्मोड़ा - कल्याण चंद

UTTARAKHAND EXAM NOTES

* टिहरी रियासत को छोड़कर सम्पूर्ण उत्तरी खण्ड को अंग्रेजो ने उत्तर-पूर्वी प्रांत का हिस्सा बना दिया तथा इस क्षेत्र के लिए प्रथम कमिश्नर कर्नल गार्डनर (1815ई०) को नियुक्त किया।

इतिहास याद

UTTARAKHAND EXAM NOTES

①

★ U.K के किस स्वतन्त्रता सेनानी को अंग्रेजो ने राजनैतिक जानवर की संज्ञा दी
बद्रीदत्त पाण्डेय

★ 'गबन' संस्कार किस जनजाति का है
भोटिया

★ नन्द केसरी किस नदी के तट पर स्थित है
पिण्डर

★ गढ़वाल पर राजकरने करने वाला प्रथम ताम्रपत्र किस राजा का है
— जगतपाल

★ U.K में गिरजा किशोर जोशी संग्रहालय कहा स्थित है
अल्मोड़ा

★ 'हिमालयन आर्ट' किसकी कृति है?
J. C फ्रेन्च

★ जलेश्वर महादेव मन्दिर कहां स्थित है
कर्णप्रयाग (पनौली)

★ अमन सभा की स्थापना किसने की थी
— मैल्कम हैली

★ आदि बद्री का स्थानीय नाम है
— नौठा

आदृश्य विक्रय प्रणाली → पानी

★ मौन विक्रय प्रणाली किस जनजाती से सम्बन्धित है
शजी

★ रानीखेत छावनी की स्थापना कब हुयी!
— 1871

★ चौखाल में 'गोलू मन्दिर' का निर्माण किसने करवाया
→ इन्द्र चन्द

★ आँख मिचौली किसका रंगीन चित्र है
मणकू

★ 'राष्ट्रीय भाषा का सवाल' पुस्तक किसने लिखी
शैलेश मटियानी

UTTARAKHAND EXAM NOTES

★ एवरेस्ट का देवता ' Book किसने लिखी
— विद्यावती डोभाल

★ यमनोत्री का शीतकालीन प्रवास स्थल है
सोमेश्वर देवालय मन्दिर (खरसाली गाँव) उत्तरकाशी

★ लक्ष्मण गंगा कहा से निकलती है
लोकपाल हेमकुण्ड

★ गोविन्द बल्लभ पन्त राजकीय प्राणी उद्यान स्थित है
नैनीताल

★ खेतो को परती छोड़कर रोजगार की तलाश में बाहर जाने वालो को कहते है
एवरैटी लैंडलार्ड

★ वासुदेव मन्दिर स्थित है
- जोशीमठ (चमोली)

★ तुंगनाथ का शीतकालीन स्थल है
- मक्कू मठ

★ राज्य की लोक भाषा में फिल्मो का निर्माण शुरु हुआ
पहली फिल्म → 1983

★ जौलजीबी मेला कहाँ लगता है
—पकराता देहरादून

★ राज्य में नवीनीकरण ऊर्जा नीति की घोषणा की गई
29 जनवरी 2008

★ राज्य में चतुर्थ वित्त आयोग के अध्यक्ष है
पहला → B.K
दूसरा B.K जोशी

★ स्कन्द पुराण में काली नदी का क्या नाम है
श्यामा

★ किस ताल की आकृति अश्वखुर के समान है
सातताल

★ G.B पन्त उच्च स्थलीय प्राणी उद्यान का क्षे० कितना है
4.693 वर्ग किमी (स्थापना-1995 (नैनीताल)

UTTARAKHAND EXAM NOTES

* U.K में मिश्रित खेती माडल' तैयार करने वाले 'जगत सिंह जगली' को आर्यभट्ट सम्मान किस वर्ष मिला
2006

* पौध रोपड़ नीति लागू करने वाला देश का प्रथम राज्य
उत्तराखण्ड (6 Jan 2006 से)

* U.K में Eco-टास्कफोर्स का गठन कब हुआ
2008-2009

* वनो पर परम्परागत हक बहाल करने के उद्देश्य से प्रारम्भ हुआ 'झपटो छीनो आन्दोलन' की शुरुआत किस वर्ष हुयी ?
21 जून 1999

* वनो की अंधाधुन कटाई को रोकने के उद्देश्य से चला 'रक्षा सूत्र आन्दोलन' की शुरुआत किस वर्ष हुयी
1994 (टिहरी के भिलंगना क्षेत्र) सुंदरभाई

* भारत का प्रथम वन कानून (भा० वन अधि०) कब पास हुआ
1884

* FRI को डिम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा कब मिला
1991

* स्वतन्त्रता के बाद 'केन्द्रीय वानिकी परिषद्' की स्थापना कब हुयी
— 1948

* जड़ी-बूटियो के संरक्षण का कार्य सहकारिता विभाग ने जड़ी-बूटी विकास योजना के तहत कब शुरु हुआ
— 1972

* U.K राज्य में औषधीय पदार्थों का संग्रहण किस अधि० के तहत किया जाता है
वन० प्रबन्धन अधि० 1982

* कौन सा बुग्याल बद्रीनाथ के चारो तरफ फैला है
फैला बुग्याल (चमोली)

* वेदो का प्रणय स्थल किस बुग्याल को माना जाता है ?
— बेदनी बुग्याल चमोली

UTTRAKHAND EXAM NOTES

★ पितृ-तीर्थ के रूप में कौन सा केदार प्रसिद्ध है।
रुद्रनाथ

★ केदारनाथ के पट किस दिन बन्द होते हैं
भैयादूज

★ गढ़वाल क्षेत्र में न्याय के लिए प्रसिद्ध एक गाय मन्दिर
कंडोलिया देवता (पौड़ी)

★ जनजातिय आस्था का प्रमुख केन्द्र थत्कू किस जिले में स्थित है
– चम्पावत (जुगर पहाड़)

★ U.K में महिला डेरी विकास परियोजना का मुख्यालय कहाँ स्थित है
– अल्मोड़ा

★ U.K में डेयरी शोध एवं विकास संस्थान कहाँ स्थित है
– नैनीताल

★ U.K चाय विकास बोर्ड का मुख्यालय कहाँ स्थित है
– अल्मोड़ा

★ IRMC की स्थापना किस वर्ष हुयी
– 1 march 1922 ड्यूक आफ विंडसर

★ हस्तशिल्प एवं हथकरघा के विकास के लिए "क्राफ्ट डिजाइन केन्द्र" स्थित है
– काशीपुर

★ IMA की स्थापना किस वर्ष हुयी
1932 में सर फिलिप चेटवुड

★ U.K में शीतोष्ण फलों के उत्पादन में वृद्धि के लिए सेन्टर आफ एक्सीलेंस कहाँ खोला गया
औद्योगिक एवं वानिकी वि०वि० अरसार पौड़ी

★ U.K में सबसे कम क्षेत्रफल वाला औद्योगिक संस्थान स्थान है।
फर्मासिटी (सेलाकुई) देहरादून

★ U.K में इलेक्ट्रानिक एवं टेली फोन फैक्ट्री
भीमताल (नैनीताल)

★ U.K में ड्यूनाल प्लान्ट स्थित है
बाजपुर (U.S. Nagar)

⇒ उत्तराखण्ड की पत्रकारिता का सफर :

Uttarakhand Exam Notes :

* 1780 में जेम्स ऑगस्टक हिक्की द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित 'बंगाल गजट' को भारत का पहला मुद्रित समाचार पत्र कहा जा सकता है।

* इसी तरह मसूरी से जॉन मैकिनन द्वारा 1842 से प्रकाशित 'द हिल्स' को उत्तराखण्ड का पहला अखबार माना जाएगा

* ऐतिहासिक प्रमाणो के अनुसार मैकिनन द्वारा शुरू किया गया अंग्रेजी भाषा का 'द हिल्स' 1842 में शुरू हुआ, तो 1850 में बन्द हो गया।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

* द मसूरी सीजन 1842 — कोलमैन (मसूरी)
* द हिमालयन क्रानिकल — जॉन नार्थम (मसूरी) (1875)

* 'द हिमालयन क्रॉनिकल' के बाद देहरादून से वानिकी अनुसंधान संम्बंधी अंग्रेजी हाउस जर्नल 'द इंडियन फॉरेस्टर' का प्रकाशन 1 जुलाई, 1875 से शुरू हुआ। उल्लेखनीय है कि इसके बाद ही देहरादून में 1878 में 'इंपीरियल फॉरेस्ट स्कूल' शुरू हुआ, जिसे 'भारतीय वन अनुसंधान संस्थान का अग्रदूत कहा जा सकता है।

* एफ. आर. आई. का मूल नाम - इंपीरियल फॉरेस्ट इंस्टीट्यूट था जिसकी स्थापना 1906 में देहरादून के इसी स्थान पर हुई थी।

* भारत का पहला हिन्दी अखबार अगर 'उदंत मार्तण्ड' 30 मई 1826 था, तो उत्तराखण्ड का पहला स्वदेशी भाषा का अखबार और कोई नहीं बल्कि 'समय विनोद' था जो कि उर्दू के साथ 'हिन्दी' में भी छपता था।

* प्रो० शेखर पाठक के लेख के अनुसार, जब पहली बार 1867 में प्रेस आई तो उसके माध्यम से 'समय विनोद' निकला था।

* अगर उत्तराखण्ड का पहला अखबार मसूरी ने दिया, तो अंग्रेजों की ही चहेती नैनीताल ने पहला हिन्दी और उर्दू अखबार 'समय विनोद' दिया था। यहां उल्लेख करना जरुरी है कि मसूरी में अंग्रेज कैप्टन यंग और देहरादून के अधीक्षक मिस्टर शोर सन 1825 में पहुँच गये थे। जबकि नैनीताल में अंग्रेजो के कदम 1839 में पड़े। उस समय आगरा में चीनी उत्पादन के कारोबार से जुड़ा अंग्रेज व्यापारी पीटर बैरन अपने मित्र के साथ भटक कर नैनीताल पहुंचा। उसके बाद 1841 से इस झील के चारो ओर अंग्रेजो के शानदार बंगले, क्लब और मनोरंजन स्थल बनने लगे।

⇒ गोपाल सिंह भण्डारी का 'उत्तर उजाला' कुमाऊँ का पहला दैनिक हिन्दी अखबार था

⇒ 'हादी-ए-आजम' कुमाऊँ का दूसरा उर्दू अखबार था

⇒ स्वाधीनता संग्रामी अखबारो की जननी — अल्मोड़ा

⇒ अल्मोड़ा को कुमाऊँ की सांस्कृतिक राजधानी के नाम से भी पुकारा जाता है।

* जागृत जनता (1938) — पीताम्बर पाण्डे

* हादी-ए-आजम (1938) — वकील निसार अहमद

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8897038494
शशिकल चौहान

⇒ 1870 में सत्ताच्युत चंद राजवंश के वंचित उत्तराधिकारी राजा भीम सिंह की अध्यक्षता में अल्मोड़ा में एक मिलन केन्द्र या चर्चा स्थल (डिबेटिंग क्लब) स्थापित हो गया। यह क्लब वास्तव में उस जमाने के विख्यात शिक्षा शास्त्री पंडित बुद्धि वल्लभ पंत के दिमाग की उपज थी। क्लब की स्थापना के बाद उसमें तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर विलियम म्यूर को लाने का श्रेय भी पंत को ही जाता है। म्यूर ने समाज में जागृति लाने के लिए एक अखबार शुरू करने का सुझाव दिया, उस समय यह अनुमान नहीं था कि एक दिन वही अखबार अंग्रेजी शासन की जड़ों में मट्ठा डालना शुरू कर देंगे।

बहरहाल, 1871 में पंडित बुद्धि वल्लभ पंत के संपादकत्व में 'अल्मोड़ा अखबार' का जन्म हुआ। यह कूर्मांचल में उद्देश्यपूर्ण पत्रकारिता की शुरुआत थी बाद में 'समय विनोद' के बंद होने के कारण अल्मोड़ा अखबार का कुमाऊँ में एक छत्र प्रसार हो गया। अल्मोड़ा अखबार पाक्षिक के रूप में लिथो प्रेस छपता रहा और फिर ट्रेडिल प्रेस में आकर साप्ताहिक हो गया। - - - - - - - - - - -

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
लखपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411365738 8077036494 सतपाल बोहरा

कूर्मांचल मित्र – जयदत्त तिवारी (1924)

⇒ 'बाजार बंधु' हस्त लिखित अखबार 1913 में अल्मोड़ा के खजांची मो० हल्ला ने शुरू किया।

⇒ - शक्ति अखबार (1918) → बदरीदत्त पांडे
- उत्थान पत्रिका, उत्तराखण्ड ज्योति → हीरा वल्लभ जोशी (पिथौरागढ़)
- ज्योति (1919) – भवानीदत्त जेठी

⇒ 1905 से पहले टिहरी गढ़वाल के नरेशों की राजाज्ञाएं लाहौर और शिमला से छपने वाले 'सिविल एण्ड मिलिट्री' में ही छपती थी।

⇒ 1905 से राजशाही ने 'एनुअल एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट' के नाम से अपना गजट छापना शुरू किया। इतिहासकार डा० मतुल सकलानी के अनुसार यह गजट 1945 तक छपता रहा

⇒ गढ़वाल मण्डल के मसूरी से उत्तराखण्ड का पहला अंग्रेजी अखबार 'द हिल्स' अवश्य निकला मगर पहले-पहल हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत कराने का श्रेय महाराजा कीर्तिशाह को ही जाता है। हालांकि जिस नींव की तैयारी कीर्तिशाह ने की थी उस पर मजबूत बुनियाद डालने का काम पं० गिरजा दत्त नैथानी ने किया था

⇒ डा० भक्त दर्शन (गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां द्वितीय संस्करण) के अनुसार सन् 1901 में यूरोप यात्रा से लौटने के बाद महाराजा कीर्तिशाह ने टिहरी नगर में एक मुद्रणालय स्थापित किया था और समूचे गढ़वाल क्षेत्र का सर्वप्रथम पाक्षिक समाचार पत्र 'रियासत टिहरी गढ़वाल' प्रकाशित कराना प्रारम्भ किया था।

पुरुषार्थ (पत्र) — गिरजादत्त नैथानी

⇒ डा० योगेश धस्माना ने अपनी पुस्तक "उत्तराखण्ड में जन-जागरण और आन्दोलन का इतिहास" पर रियासत टिहरी गढ़वाल 'अखबार' का उल्लेख किया है।

⇒ महाराजा कीर्ति शाह ने अपने वजीर हरिकृष्ण रतूड़ी को प्रोत्साहित कर उनसे गढ़वाल का इतिहास भी लिखवाया था, जो आज भी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज माना जाता है।

⇒ धनीराम शर्मा ने 1909 में पहली बार दुगड्डा में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की थी। वह ब्रिटिश गढ़वाल का पहला छापाखाना था।

⇒ रामबहादुर तारा दत्त गैरोला के नेतृत्व में विश्वम्बर दत्त चन्देला, गिरजा दत्त नैथानी, चन्द्र मोहन रतूड़ी और सदाशिव रतूड़ी आदि युवाओं ने गढ़वाल के जाने माने सम्पन्न लोगों की प्रेरणा और सहायता से 1901 में 'गढ़वाल यूनियन' की स्थापना की जिसका हिन्दी नाम 'गढ़वाल हितकारिणी सभा' रखा गया

⇒ सन् 1902 में लैंसडौन, दुगड्डा से गिरजा दत्त नैथानी के सम्पादकत्व में 'गढ़वाल समाचार' शुरू हो गया, यह अखबार सबसे पहले आर्य भास्कर प्रेस मुरादाबाद से छपा। यह 1912 से स्टॉवेन प्रेस दुगड्डा से छपने लगा था। इससे पहले गढ़वाल यूनियन ने एक पत्र निकालने की योजना बनाई तो पहले से ही मौजूद 'गढ़वाल समाचार' का स्मरण आना स्वाभाविक था, क्योंकि गढ़वाल की हिन्दी पत्रकारिता की नींव का पत्थर ही यही अखबार था। इसके लिए गिरजा दत्त नैथानी को विश्वास में लिया गया और उस पत्र को 1905 में 'गढ़वाली' के नाम से शुरू किया गया देहरादून से प्रकाशित 'गढ़वाली' (1905-1952) . . . . . इसका पहला संपादक होने का श्रेय - गिरजा दत्त नैथानी को जाता है बाद में यह पत्र उत्तराखण्ड की पत्रकारिता के इतिहास का एक आधार स्तम्भ बना। . . . . . .

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस
9411385738
8077036494
सतपाल चौहान

⇒ स्वाधीन प्रजा — विक्टर मोहन जोशी
इस अखबार के लिए प० जवाहर लाल नेहरू ने भी शुभकामनाएं भेजी थी।

⇒ ईसाइयों को मुख्य राष्ट्रीय धारा में लाने और देश की आजादी के आन्दोलन में भाग लेने के लिए उन्हें प्रेरित करने के उद्देश्य से 20 सितम्बर 1920 इलाहाबाद में ही 'क्रिश्चियन नेशनलिस्ट' अंग्रेजी साप्ताहिक शुरू किया — विक्टर मोहन जोशी

⇒ * हितैषी (साप्ताहिक) — चतुर सिंह नायक (1926)
* अंचल (1937) — जीवन चन्द्र जोशी (अल्मोड़ा)
* जागृत जनता (हल्द्वानी) — पीताम्बर पाण्डे

⇒ अल्मोड़ा से 'अल्मोड़ा अखबार', मसूरी से कुछ अंग्रेजी अखबार और देहरादून से 'गढ़वाली' निकल ही रहे थे कि सन् 1913 में ब्रह्मानंद थपलियाल ने पौड़ी में 'बदरी केदार प्रेस' की स्थापना की और फिर इस प्रेस से सदानंद कुकरेती के संपादकत्व में 1913 से 'विशाल कीर्ति' का प्रकाशन शुरू हुआ।

वह समाज सेवी जिनको भक्त दर्शन जी ने अपनी पुस्तक में 'सिलोगी के संत' से सम्बोधित किया था — सदानंद कुकरेती को

उत्तराखण्ड की पत्रकारिता का सफर (4)th

⇒ देहरादून के तीन अखबार 'अनवर आलम', 'वायस आफ दि दून', और कॉस्मोपोलिटन और इनके अलावा भी कलकत्ता, मुम्बई, बनारस, इलाहाबाद, मेरठ, पंजाब से भी देहरादून स्थित 'गढ़वाली प्रेस' में अखबार छपने आते थे।

⇒ 'कॉस्मोपोलिटन' अखबार बैरिस्टर बुलाकी राम का था, जो कि 1911 से छपना शुरू हुआ 'अनवर आलम', 'वायस ऑफ दि दून' के सम्पादकों और संचालकों के बारे में जानकारी नहीं मिल पाई।

उत्तराखण्ड एग्जाम न्यूज
9411385738
8077038494
सम्पादक बोलता

⇒ गढ़वाली के सम्पादक विश्वम्बर दत्त चन्देला पर रंवाई काण्ड के सिलसिले में टिहरी रियासत के दीवान चक्रधर जुयाल ने मान हानि का मुकदमा चलाया। चंदोला ने अपने उस संवाददाता का नाम अदालत में नहीं बताया जिसने वह रिपोर्ट भेजी थी इसलिए उन्हें एक वर्ष की जेल की सजा काटनी पड़ी। यही जेल की सजा उन्हें उत्तराखण्ड की पत्रकारिता का युग पुरुष बना गई।

⇒ महान क्रान्तिकारियों में गिने जाने वाले राजा महेन्द्र प्रताप सिंह ने देहरादून से ही 1914 में हिन्दी साप्ताहिक 'निर्बल सेवक' तो मानवेंद्रनाथ राय ने 1937 में में अंग्रेजी मासिक पत्रिका 'रेडिकल ह्यूमनिस्ट' और साप्ताहिक 'इंडिपेंडेंट इण्डिया' का प्रकाशन शुरू किया। 'निर्बल सेवक' बैरिस्टर बुलाकी राम की कॉस्मोपोलिटन प्रेस से छपता था। गढ़वाल मंडल में ही प्रख्यात साहित्यकार डा० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने श्रीनगर गढ़वाल से एक हस्तलिखित पत्रिका 'मनोरंजनी' निकाली थी डा० बड़थ्वाल ने अपने छात्र जीवन में इलाहाबाद से सन् 1921 में 'हिलमैन' पत्रिका शुरू की थी।

⇒ राष्ट्रीय आन्दोलन के संग्रामी तथा बैरिस्टर मुकुंदीलाल ने जुलाई, 1922 में लैंसडौन से तरुण कुमाऊं (1922-23) का प्रकाशन कर राष्ट्रीय तथा स्थानीय मुद्दों को साथ-साथ अपने पत्र में स्थान देने की कोशिश की जब बैरिस्टर मुकुंदीलाल ने 'गढ़वाली प्रेस' देहरादून से तरुण कुमाऊँ मासिक पत्र का मुद्रण शुरू किया

• क्षत्रीय वीर — रा. प्रताप सिंह नेगी
(पत्र)

⇒ 'उत्तराखण्ड के जन-जागरण और आन्दोलनों का इतिहास' पुस्तक
— डा० भोगेश घटवाना

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385138 8077036494 सतपाल चौहान

* सत्यवीर — डा० हरदेव सिंह (अधिकारी)
* गढ़देश (अखबार) — कृपाराम मिश्र
* गढ़वाल हितैषी — रामबहादुर पीताम्बर दत्त पसबोला

⇒ सन् 1937 में कोटद्वार से ज्योति प्रसाद माहेश्वरी ने साप्ताहिक 'उत्थान' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया

⇒ 1936 में पं० महेशानंद थपलियाल ने पौड़ी से 'उत्तर भारत' अखबार शुरू किया

⇒ लैंसडौन से 1939 में 'कर्मभूमि' का भी प्रकाशन हो गया। कुमाऊँ मण्डल के 'शक्ति' की तरह 'कर्मभूमि' भी आजादी के आन्दोलन का सशक्त स्तम्भ बना इसे पहले संपादक भक्त दर्शन और उनके सहायक भैरव दत्त धूलिया थे।

⇒ उत्तर प्रदेश सरकार ने 'शक्ति' के साथ ही 'कर्मभूमि' को भी स्वतन्त्रता सेनानी अखबार घोषित किया था

* सत्यपथ — ललिता प्रसाद नैथानी (1938)
तरुण हिन्द — भोगेश्वर प्रसाद धूलिया

पत्रकारिता (5+4)

⇒ देहरादून में भी सन् 1875 में नियमित पत्रिका का प्रकाशन शुरू करने वाले भी अंग्रेज थे। देहरादून से वानिकी अनुसंधान संबंधी अंग्रेजी हाउस जर्नल 'द इंडियन फॉरेस्टर' का प्रकाशन 1 जुलाई 1875 से शुरू हुआ। इसके पहले संपादक डा० स्चलिच थे।

⇒ ब्रिटिश शासन (काल) ने वन विभाग की स्थापना – 1864 में की थी तथा 1868 में कुमाऊँ कमिश्नरी के वनों को वन विभाग के अधीन कर दिया था।

* देहरादून का गजेटियर – एच० जी० वाल्टन (1910)

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411365738 9917034494 मतफल चालान

⇒ देहरादून से 1905 में 'गढ़वाली' स्वतन्त्रता सेनानी बैरिस्टर बुलाकी राम ने 1911 में कॉस्मोपोलिटन अखबार निकाला।

⇒ अन्तराष्ट्रीय क्रान्तिकारी राजा महेन्द्र प्रताप ने 1914 में 'निर्बल सेवक' और बैरिस्टर बुलाकी राम ने 'सत्याग्रह' निकाला बाबू बुलाकी राम की प्रेस का नाम 'भास्कर प्रेस' था।

* द हेराल्ड वीकली – बनवारी लाल वेदम (1924) मसूरी

⇒

⇒ 1925 में देहरादून से हिन्दी साप्ताहिक 'सुदर्शन' का प्रकाशन शुरू हुआ पत्र के सम्पादक गोपी वल्लभ उपाध्याय थे।

* गोर्खा संसार – ठाकुर चंदन सिंह (1926)

* द इण्डियन स्टेट्स रिफॉमर के संपादक पी. अनंत नारायण ने भी अपने समाचार पत्र के माध्यम से ...

PTO

खोई गोली कांड की खुलकर भर्त्सना करते हुए जांच की मांग की, तो टिहरी की रियासती सरकार ने 'गढ़वाली' के संपादक विश्वम्बर दत्त चन्दोला और द इण्डियन स्टेट्स रिफॉर्मर के संपादक को पी. अंनत नायमण के खिलाफ मुकदमा दायर किया और जेल की सजा भुगतनी पड़ी।

सतपाल नोटस 9411584738 8077006494 सतपाल उत्तराखण्ड

* ज्योति (पत्रिका) — रमेन्द्र चन्द बहुखण्डी
* अभय — स्वामी विद्यानंद
* स्वराज्य-संदेश — दुलास वर्मा (स्वाधीनता सेनानी)
* गंगाजल (अखबार) — धर्मस्वरूप रतूड़ी और तारा दत्त लखेड़ा
* हिमालय केशरी (1940) — विजयराम रतूड़ी
* रणभेरी (हस्तलिखित) — गोपेश्वर कोठियाल
* आजाद हिन्दुस्तान — धर्मवीर (डी०ए०वी छात्र)
* रियासत (1945) — दीवान सिंह भफतून
* युगवाणी — प्रो० भगवती प्रसाद पांथरी, गोपेश्वर कोठियाल
* टिहरी मेल — समीर-चंद अम्बवाल और मुनवल्क्य
* द हिमाचल टाइम्स (1949) — सतपाल पांथी

उत्तराखण्ड की पत्रकारिता 6th.

⇒ सन् 1948 में सत्य प्रसाद रतूड़ी ने मसूरी से 'हिमाचल' का प्रकाशन शुरू किया।

⇒ सन् 1953 में नंदप्रयाग से रामप्रसाद बहुगुणा ने 'देवभूमि' का प्रकाशन शुरू किया।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल जोशी

- प्रगति (1954) — श्याम चन्द सिंह नेगी (देहरादून)
- * द नार्दन टाइम्स (अंग्रेजी) — "
- * गढ़वाल (गढ़वाली भाषा) — "
- * नवप्रभात (मुम्बई) — परशुराम नौटियाल
- * 'साप्ताहिक उत्तराखण्ड' (अल्मोड़ा) — हीरालाल बडोला
- * 'नया जमाना' (देहरादून) — राधा कृष्ण कुकरेती
- * सत्यपथ (कोटद्वार) — ललिता प्रसाद नैथानी
- * 'पर्वतीय संस्कृति' पत्र — भगवती प्रसाद थंदोला

⇒ सन 1958 में द्वारिका प्रसाद उनियाल ने दिल्ली से 'हिमालय टाइम्स' शुरू किया, जो बाद में बिमला थला गया। नए राज्य के गठन के बाद 'हिमालय टाइम्स' देहरादून भी आ गया।

* युग धर्म – नरेन्द्र सिंह भण्डारी

⇒ सन् 1964 में मसूरी से सरदार हरचन सिंह ने 'सीमान्त प्रहरी' और गोपेश्वर से धनंजय भट्ट ने 'उत्तराखण्ड ऑब्जर्वर' शुरू किया।

* पर्वतीय जन – कुंवर सिंह रावत (पौड़ी)

उत्तराखण्ड एग्जाम न्यूज़ 9411389738 8077036494 रतपाल चौहान

* विटनेस → राजकुंवर

* दून सरोवर – लाजवंती शर्मा (देहरादून)

* 'देहरा पत्रिका' – टेकचन्द गुप्ता

⇒ सन् 1966 में देहरादून से सी. एम. लखेड़ा का 'जनप्रहर', वीर कुमार अधीर का 'छवि' और मुनि की रेती से निर्मल डंगवाल का 'नवजागरण' शुरू हुआ

* 'हिमानी' – परिपूर्णानंद पैन्यूली (पूर्व सांसद)

⇒ सन् 1967 में उस जमाने के जाने-माने पत्रकार और स्वाधीनता सेनानी श्यामचंद सिंह नेगी ने देहरादून से अंग्रेजी पाक्षिक 'द गार्डन पोस्ट' और हिन्दी मासिक 'जासूसी पिशाच' निकाले।

* * पौड़ी टाइम्स – सत्य सखा भण्डारी 1969

× उत्तरांचल – सोमवारी लाल उनियाल प्रदीप (1970)

* यमुना किनारे — सरदार-प्रताप सिंह परवाना
* 'गढ़ रैबार' (1973) — सुरेन्द्र दत्त भट्ट
* धधकता पहाड़ (1977) — नरेन्द्र उनियाल
* जंजीर — चन्द्र प्रकाश वर्मा
* गढ़गौरव — कुंवर सिंह नेगी
* दून दर्शन (1974) — राकेश चन्देला
* जौनसार बावर मेल (1977) — नारायणदत्त जोशी वीरेन्द्र चौहान (चकराता)
* 'हिमालय और हम' (1970) — पूर्व विद्यापति गोविन्द प्रसाद गैरोला
* हिंनास (मुम्बई) — अर्जुन सिंह गुसांई
* 'हिमालय की आवाज' (1971) — भगवान दास मुन्नानी (स्वतंत्रता सेनानी)
* शैलोदय — डा० शिवानंद नौटियाल

उत्तराखण्ड की पत्रकारिता की जननी — मसूरी

⇒ कहा जाता है कि यहाँ बहुतायत में उगने वाली दाल 'मसूर' के कारण ही वहां के लोग इस जगह को मंसूरी के नाम से पुकारते थे बाद में अंग्रेजो ने अंग्रेजी में इस नाम की स्पेलिंग ही बदल दी मसूरी का नाम बिगाड़ने का श्रेय 'The MUSSOORI EXCHANGE ADVERTISER) नाम के विज्ञापन पत्रक को जाता है उसी ने सबसे पहले (1870) में मंसूरी की अंग्रेजी स्पेलिंग बदली थी। उससे पहले अंग्रेज भी MASURI लिखते थे।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8877038494 सरोजनी चौहान

⇒ किस अखबार के बारे में कहा जाता है कि इस अखबार की आवाज दिल्ली के मुगल दरबार तथा कलकत्ता मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के मुख्यालय तक पहुँचती थी?

— द हिल्स (जॉन मैकिन्नन) (आयरिश)
(1842)

⇒ 'गाइड टू मसूरी' — जॉन नॉर्थन (1884)

⇒ * द बीकन (1885) — मिस्टर हावथोर्न

* द मसूरी हेराल्ड (1924) — आर. सी. गुप्ता

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
सतपाल चौहान

⇒ शक्ति प्रसाद सकलानी की पुस्तक- 'उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास'

⇒ डा० उमाशंकर शंकर थपलियाल की प्रसिद्ध पुस्तक - 'गढ़वाल में पत्रकारिता और हिन्दी साहित्य'

⇒ 'मसूरी मिडले-टेल्स ऑफ मस्टर इयर्स' पुस्तक — गणेश शैली

⇒ 'मेमोयर ऑफ देहराइन' — जी. आर. सी. विलियम्स

शक्ति प्रसाद सकलानी अपनी पुस्तक में लिखते है कि "उस समय राजशाही (अंग्रेज) विरोधी अखबार 'मैफेसिलाइट' का प्रकाशन भी मसूरी में हुआ। यह अविश्वसनीय किन्तु सत्य है कि औपनिवेशिक शासन में आंग्लभाषी अखबार ने शासन की खूब टीका-टिप्पणी की थी। इस कारण संपादक मिस्टर जॉन लेंग ब्रिटिशों के लिए ~~किरकि~~ किरकिरी बने रहे। कुछ इतिहासकार मैफेसिलाइट का प्रकाशन वर्ष सन् 1845 मानते हैं जॉन लेंग झाँसी की रानी के वकील रह चुके थे उन्होंने ही तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी के विरुद्ध रानी रानी लक्ष्मीबाई का मुकदमा लड़ा प्रख्यात कहानी कार रस्किन बॉड ने मसूरी के मेल्स वैक जॉन लेंग की कब्र खोजी थी। जिसका अनावरण आस्ट्रेलिया के उच्चायुक्त जान फिशर ने किया

Note -

* उत्तराखण्ड के प्रमुख नगर एवं प्राचीन नाम

नगर	—	प्राचीन / प्रचलित नाम
* देहरादून	→	द्रोणनगरी, वननगर
* ऋषिकेश	→	कुब्जग्राम, संतनगरी
* हरिद्वार	→	मायापुर, गंगाद्वार
* अल्मोड़ा	→	खगमरा, गंगाद्वार
* पिथौरागढ़	→	सौर
* टिहरी	→	त्रिहरि, गणेश तीर्थ
* जागेश्वर	→	योगीश्वर
* बैजनाथ	→	वैद्यनाथ
* रुद्रप्रयाग	→	पुनाड़
* जोशीमठ	→	ज्योतिमठ
* लैन्सडाउन	→	कालो डांडा
* काशीपुर	→	गोविषाण
* गोपेश्वर	→	गोचल
* उत्तरकाशी	→	बाड़ाहाट

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
नरपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

थारू

दुनिया की अधिकांश जनजातियां वनो में निवास और निर्भर और आखेटक संग्रहक रही है और कृषि पर निर्भर न होने के कारण उनके जीवन को स्थायित्व नहीं मिला। लेकिन थारू जनजाति कृषि पर आधारित होने के कारण उनके जीवन को स्थायित्व मिला है। इसीलिए थारुओं की आबादी फलती-फूलती रही है। वे आज उत्तराखण्ड के तराई से लेकर उत्तर-प्रदेश के पीलीभीत तक फैले हुए हैं। उनकी विडम्बना यह कि तराई की उपजाऊ जमीन उन्हे धरती पुत्र बनाती थी। वह जमीन खिसक कर बाहर से आकर बसे लोगो के पास जा रही है। मानव विज्ञानी उन्हे मंगोलियन तथा कोई उन्हे खिरात वंशीय मानता है। जबकि थारू स्वंय को राजस्थान के राजपूत और राणा प्रताप के वंशज मानते है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

भूमि से वंचित होते भूमि पुत्र — थारू

थारू उत्तराखण्ड में निवास करने वाली पांच जनजातियों में से एक है। कृषि आधारित थारुओं की बसागत उत्तराखण्ड मे तराई से लेकर बिहार तक तथा उत्तर नेपाल तक फैली है। ये उत्तर-प्रदेश मे लखीमपुर, खीरी, बहराइच एंव गोरखपुर जिलो में रहते हैं।....

(2)

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

उत्तराखण्ड में इनकी आबादी मुख्यत: नैनीताल जिले की सितारगंज तहसील तथा उधम सिंह नगर की खटीमा तहसील में ही केन्द्रित है। सन् 1951 में सर्वप्रथम 214 जनजातियों को अनुसूचित जन जातियों का दर्जा दिया गया तो थारू उस सूची में नहीं आ सके। इसके बाद 1967 में (द कान्स्टिट्यूशन आर्डर 1967: 78) के तहत) उत्तर प्रदेश के भोटिया, बोक्सा, जौनसारी और राजी के साथ ही थारू को भी अनुसूचित जनजाति का दर्जा दे दिया गया।

नैनीताल जिले में गदरपुर तथा पौड़ी जिले के लालडांग क्षेत्र में भी थारुओं की बस्ती है। खटीमा और सितारगंज विकास खण्डों में थारुओं की आबादी रहती है। 'थारुआट' का मतलब तराई का गहरा एवं दलदला क्षेत्र होता है। इसमें भूमिगत जल अधिक होता है। यहां के नदी नालों में प्राय: बाढ़ आती है। यह क्षेत्र पूर्व में एक घना जंगल था। आज भी यह जल से घिरा हुआ है, इस लिए यहां खूंखार जानवरों से लेकर जानलेवा बीमारी मैलेरिया को पैदा करने वाले मच्छरों की भरमार रही है। यहां एक जमाने में मैलेरिया बहुत होता था इसलिए यह मलेरिया जोन घोषित था। क्षेत्र में प्राचीन थारू जाति के लोगों के अलावा कोई बाहरी व्यक्ति बसने की हिम्मत नहीं जुटा पाता था। मच्छरों के बीच अपना अस्तित्व बचाने में कामयाब थारुओं को 'मलेरिया-प्रूफ' मानव कहा जाता था।

7579431731 उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान 'सर' 7579431731

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

थारू शब्द की उत्पति के बारे में विद्वानों में मतैक्यता नहीं है। थारू शब्द की उत्पति 'तरुवा' शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ भीगना होता है

नेसफील्ड ने थारू की उत्पति थार मानी है। (शब्द से)

उस समय थार शब्द का अर्थ स्थानीय बोली में 'जंगलवासी' से लगाया जाता था। कूक ने थारू शब्द की उत्पति दारू माना है।

⇒ नोल्स के अनुसार - थारू लोगों में अपहरण विवाह प्रथा थी।

अधिकांश मानव विज्ञानियों ने थारुओं को मंगोलियन नस्ल का तथा ऐतिहासिक किरातों का वंशज माना है।

रिजले ने थारू जनजाति को एक मिश्रित प्रजातीय समूह बताया है। और शारीरिक विशेषताओं के आधार पर मंगोल प्रजाति के निकट माना है।

थारू जनजाति के लोग स्वयं को भारतीय संस्कृति के स्वाभिमान के प्रतीक महाराणा प्रताप के सैनिक मानते हैं।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स

(4)

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर

शारीरिक गठन -

थारूओं को नोल्स ने द्रविड़ प्रजाति के अन्तर्गत माना है और कहा है कि दक्षिण की ओर से तराई में आकर ये लोग बस गये मजूमदार का मत है कि इनकी शारीरिक रचना मंगोलॉयड प्रजाति से मिलती-जुलती है, जैसे तिरछे नेत्र, गाल की हड्डियां उभरी हुई, रंग भूरा-पीला, शरीर और चेहरे पर बहुत कम और सीधे बाल, मध्यम और सीधे आकार नाक आदि। जबकि अन्य शारीरिक लक्षणो में ये नेपालियों से मिलते-जुलते हैं, क्योंकि कई शताब्दियों से इनके वैवाहिक सम्बंध नेपाल के दक्षिणी क्षेत्र में बसे वहां के थारूओ से रहे हैं। थारू स्त्रियों का रंग अधिक साफ होता है।

वास्तविकता यह कि थारूओ में मंगोलॉयड और भारतीय जातियां दोनो के मिश्रित शारीरिक लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। सांस्कृतिक सम्पर्कों के फलस्वरूप यहि जाति के शारीरिक लक्षणों में पर्याप्त परिवर्तन हुए हैं। यद्यपि थारूओं का औसत कद आज भी छोटा ही होता है। जबकि कुछ विद्वान इन्हे भारत-नेपाल के आदिम निवासी सिद्ध करते हैं, क्योंकि इनकी बोली हिन्दी और नेपाली से प्रभावित है।

7579431731 उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

आजीविका -

आर्थिक दृष्टि से थारू एक आत्मनिर्भर जनजाति है, जो अपनी आवश्यकता से सम्बन्धित सभी वस्तुओं का स्वंय ही उत्पादन करते है। थारुओ का मुख्य व्यवसाय कृषि है तथा जमीन से जुड़ने के कारण यह स्थिर जनजातियो में से एक है। खेती के साथ ही वह अपने भोजन के लिए मछली तथा वन्य जीवो का आखेट भी करते है। वे अपने रहने के लिये मकान स्वंय बनाते है। उन्हे मवेशियो, सुअर तथा मुर्गी पालन में विशेषज्ञता हासिल है।

थारू महिलाए टोकरी, चटाई, दरी और हाथ के पंखे बनाने सिद्धहस्त होती है। यह एक खास किस्म की मिट्टी में भूसा मिलाकर - बड़े-बड़े तथा विभिन्न प्रकार के कोठार बनाने में माहिर होती है। इन कोठारो को कुठिया या कठली भी कहते है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

थारुओ का खेती के अलावा मछली का शिकार दूसरा मुख्य कार्य है। इन्हे चावल और मछली बहुत पसंद है। गांव के सभी स्त्री पुरुष 20 या 30 के समूहों में दूर बहती हुई शारदा नदी या नहर में जाल या दपरिया लेकर जाते है। और शाम तक मछली मारने के बाद लौटते है। रोचक बात तो यह है कि पूर्व में स्त्री पुरुष मछली पकड़ने अलग - अलग जाते थे..

(सतपाल चौहान
उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स)

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस
सतपाल चौहान सर, 7579431731

तथा प्रायः स्त्रियां पुरुषो की पकड़ी हुई और यहां तक कि उनकी छुई हुई मछली नही खाती थी

अधिकतर थारुओं को कुशल एवं अपर्याप्त कृषि से साल भर के लिए खाद्यान्न प्राप्त नही होता। वे स्वभाव से भोले और सुस्त होते है। अभी तक इनके फसल बोने से लेकर उपज को बाजार में बेचने तक सभी ढ़ग परंपरागत है।

शिक्षा के प्रसार के साथ ही (थारुओं) युवाओं को सरकारी तथा नीजि क्षेत्र में रोजगार मिलने लगा है. फिर भी सरकारी नौकरियों और व्यवसाय के मामले में थारु भोटिया तथा जौनसारी से काफी पीछे हैं. खटीमा नगर थारुओं की जमीन पर बसा है, मगर उसमें व्यवसाय करने वाले 90 प्रतिशत से अधिक लोग गैर थारु है। आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक उत्थान के मामले में थारु जनजाति को भोटिया और जौनसारी जनजातियों के बाद रखा गया। थारु समाज में श्रमिक और भूमिधर में अन्तर दिखाई नही देता। श्रम का भुगतान नगद में नही बल्कि सामग्री में होता है। इसीलिए मानव विज्ञानी तथा नियोजनकर्ता इसमें बंधुवा मजदूरी चिन्हित नही कर पाये।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान
उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

P.T.O

7579431731 उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

सामाजिक पद्धति : थारुओं में पितृसत्तात्मक, पितृवंशीय और पितृस्थानीय परंपरा पाई जाती है। लेकिन समाज मे महिलाओं का महत्व और भूमिका पुरुषो से कम नहीं होती। इस समुदाय की महिलाएं अधिक सम्मानित एवं विशेषाधिकार प्राप्त होती हैं। वे सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक आदि सभी क्षेत्रो में निर्णायक भूमिका का निर्वाह करती है। ये महिलाएं स्वंय को चित्तौड़ की रानी पद्मावती की वंशज मानती है।

टर्नर (1931) के मत में थारु समाज दो अर्द्धांशो में बंटा था जिसमे से प्रत्येक के छह गोत्र होते थे। दोनों अर्द्धांशों में पहले तो ऊपरी अर्धांशों में नीचे अर्धांश की कन्या का विवाह संभव था परन्तु धीरे-धीरे दोनों अर्द्धांश अंतर्विवाही हो गये "काज" और 'डोला' अर्थात वधूमूल्य और कन्या अपहरण पद्धति से विवाह के स्थान पर अब थारुओं में भी अब 'सांस्कारिक' विवाह होने लगे हैं।

अब भी दूर दराज के थारुओ के गांवो में अपने ही ढंग से विवाह होते है। इनमें वर पक्ष की ओर से किसी मध्यस्थ (मस्पतिया) द्वारा विवाह की बातचीत चलती है। . . . . PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411345738 8077038494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579453731

पहले इनमें दोनों पक्षों में लड़कियों के अदला-बदली की प्रथा थी क्योंकि वर पक्ष को दुल्हन के पिता के 'टेक' के रूप में दुल्हन मूल्य अदा करना पड़ता था। अब इनमें 'तीन टिकड़ी' प्रथा जोर पकड़ रही है। इस व्यवस्था के तहत तीसरे परिवार से दुल्हन उपलब्ध कराई जाती है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411345738 8077038494 सतपाल चौहान

थारुओं में विवाह फागुन के शुक्ल पक्ष में होते हैं, परन्तु कभी-कभी किसी का बैशाख के शुक्ल में भी विवाह हो जाता है। इसे 'लठमखा' भोज कहते हैं। दोनों पक्षों में जब विवाह तय हो जाता है तो उसे "पक्की पोढ़ी" कहते हैं। विवाह से एक दिन पूर्व भूमसेन की पूजा होती है। थारुओं में विवाह संस्कार प्रचलित है परम्परागत रीतियों के साथ सम्पन्न किया जाता है। इसमें 'चूल्हा बैठाना', "भूमिया पूजन", "सर देना", "तेल चढ़ावा", "पहरावा" "भौंरी", 'कन्यादान', "भवर" आदि प्रमुख रस्में हैं। आराखण्ड की अन्य जातियों में गौना प्रथा नहीं है। इसके अलावा विधवा विवाह, जिसमें "चुटकया" तथा "उठाणा" विवाह प्रचलित है। ० ० ० ०

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

'चुटकटा' विधवा पुनर्विवाह में विधवा अपने दुसरे पति स्वंय अपने ही घर पर (आने कि पूर्व पति के घर) रख लेती है। इस प्रकार के पति की चुटिया काट दिया जाता है।

✓ **दुधाता प्रथा**— में विधवा से विवाह करने का इच्छुक व्यक्ति पारम्परिक सहमति से उसे अपने घर ले जाता है। वे आपस में पति-पत्नी के रूप में रहने लगते है।

⇒ लड़के के विवाह में 'भुइयां रोटी' "हल्दी रोटी" तथा "कच्ची रोटी" के नाम पर समस्त अतिथियों को भोज दिया जाता है।

मृत्यु संस्कार:- मृत्यु होने पर परिवार के सदस्य शव को स्नान कराकर उस पर हल्दी का लेप कर उसे नये कपड़े पहना देते है। फिर शमशान में ले जाकर लाश को आधा जला देते है, जबकि पहले इसे गाड़ देते थे। अन्त में घर की शुद्धि कर समाज को भोज दिया जाता है। जब वे मुर्दे को दफना कर लौटते थे तो चौराहे पर एक छोटी सी पुलिया मृतक की आत्मा को संकटो से पार लगाने के लिए बनाते थे। थारुओं में अधिकांश खुशी के मौको पर सामूहिक भोज और शराब का प्रचलन है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर

थारुओं के त्योहार - थारुओं में अन्य हिन्दुओं की तरह ही होली, दीपावली, दशहरा गंगा स्नान आदि त्योहारों को बड़े धूम धाम से मनाते हैं। थारुओं में होली एक सांस्कृतिक महोत्सव है। जिसे वे पूरे एक माह आठ दिन तक मनाते हैं। होलिका दहन से पहले जिन्दी होली होती है और फिर बाद में भरी होली। शिवरात्री से शुरू होने वाली होली, होलिका दहन तक जिन्दी होली के रूप में मनाई जाती है।

सामाजिक संगठन - बड़े परिवार को व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए परिवार का एक योग्यतम पुरुष 'गन्धूर' या 'मालिकार' चुना जाता है। इसके लिए उस पुरुष का सबसे बुजुर्ग होना जरूरी नहीं है। इसी प्रकार परिवार की महिलाओं में से एक 'गन्धूरेणी' या मालकिन चुनी जाती है।

थारुओं की तीन शाखाएं और 26 उपशाखाएं हैं। उपजातियों का नाम कुछ क्षेत्र विशेष के नाम पर भी हुआ है जैसे डांग के डंगवारिया, चितवान के चितवानिया, एवं नवलपुर के थारुओं को नवलपुरिया कहते हैं। प्रत्येक उपजाति समूह कई 'कुरी' या 'गोरियाल' से बना होता है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

अन्ध विश्वास और आस्था वे वनों को भूत-प्रेतों से भरा मानते है। इसलिए वे शाम को या रात को जंगलो में जानवरो से अधिक भूत-प्रेतो से डरते है। उनमें अवसर विशेष पर देवता विशेष की पूजा करने का रिवाज है।

- साख ही सम्पति की देवी — जाखिन, की पूजा होती है
- फसल का देवता — जगमाठिया, देवता
- सांपो से रक्षा करने वाला — सम्पेहेलिया देवता
- भेड़ियो से बला टालने वाला — भण्डुवा
- बच्चो का रक्षक — अखेड़िया

इसके अलावा भी थारू मन्दिरों में सैकड़ो आत्माओं और भूत-पिशाचों के प्रतीक रखे जाते है।

थारू गांवों मे चीवर मन्दिर होता है, जिसमें गांव के देवता को घर के अन्दर स्थापित किया जाता है। जबकि चमराज तथा भैंसासुर को गौशाला के अन्दर रखा जाता है। ढोर धणी (पशु रक्षक) को गांव के निकट रास्ते में रखा जाता है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

विकास और थारू –

जनजातियों के हितो के संरक्षण के लिए भारत(सरकार) ने संविधान के प्रावधानों के अन्तर्गत 1967 में उत्तर प्रदेश की 4 अन्य जातियों के साथ ही थारुओं को अनुसूचित जनजाति घोषित किया था इसके बाद जनजातियों के आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए लखनऊ मे एक पृथक जनजाति विकास निदेशालय की स्थापना की। चूंकि इस निदेशालय को धन सीधे भारत सरकार से मिलता था। इसलिए निदेशालय द्वारा कुछ जनजाति क्षेत्रो मे एकीकृत जनजाति विकास परियोजनाएं 1993 में शुरू की गई।

थारुओं मे धर्म परिवर्तन : जोगीडेर, नगला, सहजना, चांदा, मोहनपुर, नौगवा, ठगू, पहनिया

थारू परिवार धर्म परिवर्तन कर ईसाई बन गए हैं ये सारे गांव खटीमा विकास खण्ड के हैं जब गांवो में कोई बीमार होता है तो वे उसे झाड़-फूंक और तंत्र-मंत्र के लिए भरारे के पास ले जाते हैं। भरारे की तन्त्र-मंत्र विद्या जब काम नही आती है तब बीमार की बीमारी गम्भीर होती है तो तब लोग अक्सर बीमार को पीलीभीत स्थित ईसाइयों के सेंट पैट्रिक अस्पताल ले जाते हैं वहां ईसाइयों का मुफ्त इलाज होता है बल्कि और लोगो से भरपूर शुल्क लिया जाता है कहते हैं मरता क्या नही करता यह कहावत थारुओं पर भी लागू होती है वे मजबूरी में ईसाई बन जाते हैं।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411335738 8077038494 सतपाल चौहान

गढ़वाल-कुमाऊँ में स्वतन्त्रता संग्राम के स्थानीय कारण — भाग-2

वर्ग-'ख'

⊛ सांस्कृतिक कारण -

किसी भी देश में जन-जागृति उत्पन्न करने का प्रमुख (कारण) श्रेय वहां की साहित्यिक संस्थाओं तथा समाचार पत्रों को दिया जाता है। स्वतन्त्रता-संग्राम की अवधि में गढ़वाल-कुमाऊँ में सामाजिक और राजनैतिक चेतना का प्रसार करने का पूरा श्रेय वहां की साहित्यिक संस्थाओं एवं समाचार पत्रों को है। जिनका क्रमवार निम्न है :

⇒ डिबेटिंग क्लब, सत-सभा और संस्कृत विद्यालय की स्थापना (1870) —

1870 ई० में बुद्धिवल्लभ पंत के सतत प्रयत्नों से अल्मोड़ा में 'डिबेटिंग क्लब' की स्थापना हुई। इसी समय अल्मोड़ा में 'सत सभा' और 'संस्कृत पाठशाला' भी खोली गई। इन सभी संस्थाओं का उद्देश्य सामाजिक एवं नैतिक उन्नति के साथ-साथ सरकार से प्रजा के दुःखों को दूर करने के लिए निवेदन करना था . . . .

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385730 8077030494 सतपाल चौहान

इण्डियन बोयज हिल स्कूल -1912 -

यह स्कूल 1912 मे थियोसोफिस्ट नेता 'जी० एस० औरंडले' और उनके स्थानीय सहयोगियों की प्रेरणा से अल्मोड़ा में खोला गया। यह संस्था स्थानीय जनता द्वारा दिये गये चंदे से चलती थी और इसका मुख्य उद्देश्य सनातन धर्म एवं राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार करना था

शुद्ध साहित्य समिति 1913 - 1913 में 'स्वामी सत्यदेव' ने अल्मोड़ा

में शुद्ध साहित्य-समिति की स्थापना की। इस समिति में तत्कालीन कुमाऊँ के भद्र पुरुषो ने सक्रिय भाग लिया शुद्ध साहित्य समिति की प्रमुख विशेषता यह थी कि उसमें साहित्यिक पुस्तको के अतिरिक्त राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण पुस्तके, जिन्हे रखना और पढ़ना अवैधानिक था, ढूँढ़-ढूँढ़ कर रखी गई थी। इस समिति मे 1857 के विद्रोह में भाग लेने वाले वीर मंगल पाण्डे तात्या टोपे आदि के क्रिया-कलापो एवं अंग्रेजो के अत्याचारो से वर्णित पुस्तके भी उपलब्ध थी। इस समिति के अधिवेशन समय-समयपर होते रहते थे।.....

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411389738 8077036494 सतपाल चौहान

इस प्रकार 'शुद्ध-साहित्य-समिति' के माध्यम से कुमाऊँ में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रसार हुआ है सन 1857 में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह में भाग लेने वाले नेताओं के इतिहास तथा उनकी राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण साहित्य को पढ़ने से जनसाधारण पर राष्ट्रीय भावनाओं का प्रभाव पड़ा। बीसवीं शताब्दी में कुमाऊँ कमिश्नरी में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध होने वाले आन्दोलनों के लिए यह भी एक प्रमुख कारण था। सन 1913 से 1926 तक निरन्तर साहित्यिक सेवा के माध्यम से राष्ट्रीयता का प्रचार कर योग्य संचालक के अभाव में यह समिति समाप्त हो गयी।

समर-स्कूल अल्मोड़ा :- स्वामी सत्यदेव ने अल्मोड़ा के नारायण तिवारी देवालय में स्थित अपनी कुटी में 'समर स्कूल' नामक संस्था की स्थापना की इस (~~प्रकार~~) स्कूल में देश प्रेमी लोग नियमित रूप से एकत्रित होकर देश में व्याप्त समस्याओं पर विचार-विमर्श करते थे और उसके समाधान के लिए उपाय ढूंढ निकालते थे

प्रेम सभा :- 1914-1915 में गोविन्द बल्लभ पंत के प्रयत्नों से साहित्यिक प्रचार तथा समाज सुधार के उद्देश्य से काशीपुर में प्रेम सभा की स्थापना हुई यह सभा (काशी नागरी प्रचारिणी) सभा की शाखा के रूप में स्थापित हुई प्रेम सभा के स्वंय सेवकों ने काशीपुर तथा पर्वतीय क्षेत्र में समाज सेवा के कार्यों में सक्रिय भाग लिया। समय-समय पर इस सभा के अधिवेशन होते रहते थे।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

प्रेम विद्यालय ताडीखेत (1921) —

1921 में देश भक्त भागीरथ पांडे और हर गोविन्द पंत के प्रयत्नो से ताडीखेत (अल्मोड़ा) में प्रेम विद्यालय की स्थापना हुई। इस संस्था ने पर्वतीय प्रदेश में रचनात्मक कार्य किए और राष्ट्रीय आन्दोलनों को संगठित रूप से संचालित करने के लिए योग्य कार्यकर्ताओं को जन्म दिया। इस प्रकार प्रेम विद्यालय एक विशुद्ध राष्ट्रीय संस्था थी, जहां स्वतन्त्रता सेनानी राष्ट्रीय भावनाओं की शिक्षा ग्रहण करते थे।

देव प्रयाग पुस्तकालय — कृष्णा पुस्तकालय देव प्रयाग' स्थानीय

जनता में साहित्यिक जागृति एवं चेतना का संचार कर रहा था अत: टिहरी राज्य की सरकार ने इस पुस्तकालय पर अपंजीकृत होने का दोष आरोपित कर उसे गैर कानूनी घोषित कर दिया और उसके मंत्री रामदयाल एवं प्रमुख कार्यकर्ता विद्याधर डंगवाल को गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया

देवप्रयाग के आस-पास के सभी साहित्यिक प्रेमियों को उनके ज्ञान के केन्द्र को बलात् बंद करने की रियासती नीति अरुचिकर लगी। फलत: उनके हृदय में टिहरी राज्य के प्रति घृणा की भावना उत्पन्न हो गयी।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877038494 सतपाल चौहान

टिहरी में बाल-सभा की स्थापना 1935 -

1935 में सत्यप्रसाद रतूड़ी ने सकलाना पट्टी के उनियाल ग्राम में बाल-सभा की स्थापना की इस संस्था का मुख्य उद्देश्य स्कूल के विद्यार्थियों में सामाजिक सेवा का भाव उत्पन्न करना था। धीरे-धीरे इसका प्रभाव बढ़ता गया यद्यपि प्रारम्भ में 'बाल सभा' का उद्देश्य सामाजिक सेवा था, यद्यपि बाद में देश प्रेमी अध्यापक सत्यप्रसाद रतूड़ी इसके माध्यम से छात्रों में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने लगे थे। अतः टिहरी राज्य सरकार ने 'बाल-सभा' पर रोक लगाने की कोशिश की और इसके कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया।

अन्य संस्थाएं :

बाल सभा के अतिरिक्त टिहरी में 'सरस्वती विद्यालय' 'हिमालय विद्या पीठ' आदि संस्थाएं खुली, जिनका प्रमुख उद्देश्य नवयुवकों में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रसार करना था। इसी प्रकार कुमाऊँ में भी 'गणानांत्वा गजपति' 'सेवाश्रम बागेश्वर' 'गांधी आश्रम चनौदा, स्वराज्य मन्दिर बागेश्वर, उद्योग मन्दिर देघाट, 'रामकृष्ण धाम अल्मोड़ा, राम सिंह धौनी आश्रम जैंती, जौहर सेवा संघ भुंशियारी, दमा सेवा संघ धारचूला, नामक संस्थाओं की स्थापना हुई इन सभी संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य रचनात्मक कार्यों एवं राष्ट्रीय भावनाओं का प्रसार करना था।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

साहित्यकार -

साहित्य समाज का दर्पण होता है। उन्नीसवी तथा बीसवीं शताब्दी में कुमाऊँ-गढ़वाल में अनेक साहित्यकारो का अभिर्भाव हुआ। इस अवधि के कुमाऊँ - गढ़वाल के कवियों के काव्य में राष्ट्रीय भावना, विदेशी वस्तो का बहिष्कार, स्वदेशी प्रचार, सामाजिक बुराईयों पर तीव्र प्रहार और ब्रिटिश शासन के दोषो पर प्रकाश स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इन कवियो में लोककवि गुमानी, मौलाराम, गौर्दा का नाम उल्लेखनीय है।

लेखको में डा० हेमचन्द्र जोशी, बद्रीलाल शाह, आदि प्रमुख है। इन दोनो लेखको ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन को गतिशीलता प्रदान की। राष्ट्रीय कार्यो में व्यस्त देश के महान नेताओ से सम्बन्धित गीत भी कुमाऊ-गढ़वाल के लोक साहित्य में दिखाई देते हैं

* समाचार पत्र *

समाचार पत्रो के माध्यम से जनसाधारण जागृति उत्पन्न होती है। इसीलिए उनके महत्व को संसार के महान पुरूषों ने भी स्वीकार किया है। ब्रिटिश काल में प्रमुखत: निम्न लिखित समाचार पत्र कुमाऊँ-गढ़वाल में सामाजिक तथा राजनैतिक जागृति उत्पन्न कर रहे थे —

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

अल्मोड़ा अखबार 1871

1870 में अल्मोड़ा में डिबेटिंग क्लब की स्थापना के पश्चात संयुक्त प्रान्त के लाट साहब सर विलियम म्योर 'अल्मोड़ा आये। अल्मोड़ा के कुछ भद्र पुरुषों ने लाट साहब से भेंट कर उन्हें डिबेटिंग क्लब के उद्देश्यों से अवगत कराया। क्लब के उद्देश्यों से प्रसन्न होकर लाटसाहब ने उन्हें क्लब के कार्यों के विवरण को प्रकाशित करवाने के लिए एक प्रेस खोलने का सुझाव दिया।

अतः 1871 में डिबेटिंग क्लब प्रेस से 'अल्मोड़ा अखबार' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया डा० पालीवाल तथा डा० त्रिलोचन पाण्डे का यह कथन कि 'अल्मोड़ा अखबार' का प्रकाशन 1913 से प्रारम्भ हुआ था, सर्वथा असंगत है।

सरकारी रजिस्टर में अल्मोड़ा अखबार की संख्या दस अंकित है। और संयुक्त प्रान्त का प्रथम दैनिक माना जाता है। 1913 से पूर्व अल्मोड़ा अखबार राजनीति से सम्बन्ध न रखकर केवल समाज से सम्बन्धित स्थानीय समाचार प्रकाशित करता था। 1913 में मुंशी सदानन्द सनवाल के स्थान पर बद्रीदत्त पाण्डे 'अल्मोड़ा अखबार' के सम्पादक नियुक्त हुए. उन्होंने इस पत्र को नवीन स्वरूप प्रदान किया. . . . . .

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

..... बद्रीदत्त पाण्डे के संपादकत्व में अल्मोड़ा अखबार' के माध्यम से राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत एवं ब्रिटिश शासन के फलस्वरूप समाज में व्याप्त कठिनाइयों पर अत्यन्त मार्मिक लेख प्रकाशित होने लगे फलतः अल्मोड़ा अखबार की ग्राहकसंख्या तीन गुना बढ़ गई। यह समाचार पत्र ब्रिटिश सरकार के बड़े अधिकारियों के काले-कारनामों की आलोचना करने में भी नहीं चूकता था।

अतः अल्मोड़ा अखबार अंग्रेज अधिकारियों के दिल में खटकने लगा जिसके परिणामस्वरूप 1918 में इस पत्र से एक हजार रुपये की जमानत मांगी गई और न देने पर इसके प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

शक्ति साप्ताहिक - 1918

1918 में सरकार के हस्तक्षेप के कारण अल्मोड़ा अखबार का प्रकाशन बन्द हो जाने पर दीपावली के शुभ अवसर पर बद्रीदत्त पाण्डे के सम्पादकत्व में शक्ति साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। वे 1918 से 1926 तक इसके संपादक रहे 'शक्ति' पत्र के माध्यम से राष्ट्रीयता का प्रचार तथा अंग्रेजों एवं राजभक्तों के जन विरोधी कार्यों पर तीव्र कटाक्ष किये। एक विशुद्ध राष्ट्रीय समाचार पत्र होने के कारण सरकार द्वारा कई बार इससे जमानत मांगी गई। सरकारी अध्यादेश के कारण 1942 से 1946 तक 'शक्ति' का प्रकाशन बन्द रहा।

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

1946 में गोविन्द वल्लभ पन्त के प्रयत्नों के फलस्वरूप पुनः इसका प्रकाशन हुआ। बद्रीदत्त पाण्डे के अतिरिक्त राम सिंह धौनी और विक्टर मोहन जोशी जैसे महान देश भक्त भी कुछ अवधि तक शक्ति के संपादक रहे।

स्वाधीन प्रजा – 1930

जनवरी 1930 को प्रजातंत्र की कल्पना के प्रचारार्थ विक्टर मोहन जोशी ने 'स्वाधीन प्रजा' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया इस समाचार पत्र हेतु जवाहर लाल नेहरू ने भी अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। 'स्वाधीन प्रजा' के माध्यम से मोहन जोशी ने जनसाधारण में राष्ट्रीय भावनाओं का व्यापक प्रचार किया जोशी जी के लेख इतने मार्मिक तथा उत्तेजक होते थे कि साधारण मनुष्य के हृदय में भी चेतना का संचार कर देते थे। उन्होंने 'पिण्डारी ग्लेशियर की सैर' और 'परत हिमालय सरकार' नामक शीर्षकों के माध्यम से सरकार की दमन नीति पर कुठाराघात किया फलतः सरकार ने इस पत्र से छः हजार रुपये की जमानत मांगी। जमानत देना स्वाभिमानी जोशी जी के सिद्धान्तों के विरुद्ध था। अतः उन्नीसवां अंक अर्द्ध प्रकाशित कर प्रेस ताला डालदिया गया। तत्पश्चात कृष्णानन्द जोशी ने स्वाधीन प्रजा का प्रकाशन जारी रखा।

गढ़वाली पत्र 1905

गढ़वाल भूनिमत की ओर से 1905 में देहरादून से 'गढ़वाली' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ प्रारम्भ में यह पत्र पाक्षिक था। किन्तु 1913 में ब्रिटिश गढ़वाल से प्रकाशित होने वाले कुछ छोटे-छोटे समाचार पत्रों को 'गढ़वाली' पत्र में सम्मिलित कर साप्ताहिक बना दिया गया प्रारम्भ में गिरजा दत्त नैथानी, तारादत्त गैरोला, और तत्पश्चात विश्वम्भर दत्त चन्दोला इसके संपादक रहे। शनैः शनैः गढ़वाली एक उच्चकोटि का साप्ताहिक समाचार पत्र बना। इसके माध्यम से दोनो गढ़वालों (ब्रिटिश गढ़वाल और टिहरी गढ़वाल) में सामाजिक तथा राजनैतिक चेतना का प्रादुर्भाव हुआ।

कर्मभूमि साप्ताहिक 1939

लैसडौन से 'कर्मभूमि' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ कर्मभूमि के माध्यम से टिहरी में रियासत के विरुद्ध जन आन्दोलन को व्यापक बनाया गया टिहरी-जन आन्दोलन के युवा नेता श्रीदेव सुमन को कर्मभूमि के संपादक मण्डल में स्थान दिया गया। जिन्होने कर्मभूमि साप्ताहिक पत्र के माध्यम से टिहरी रियासत के जनसाधारण

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411395736 8077038494 सतपाल चौहान

की समस्याओं पर विचारपूर्ण तथा गम्भीरतापूर्ण लेख लिखे कहा जाता है कि 'कर्मभूमि' ने ब्रिटिश गढ़वाल के राष्ट्रीय तथा टिहरी राज्य के जनआन्दोलनों की कड़ियों को जोड़ने और गतिशील बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इन प्रमुख समाचार पत्रों के अतिरिक्त कुमाऊँ - गढ़वाल से 'जागृत जनता' 'विशाल कृति', 'पुरुषार्थ' आदि छोटे- छोटे समाचार पत्रों का प्रकाशन होता था। इन सभी समाचार पत्रों का उद्देश्य कुमाऊँ - गढ़वाल में सामाजिक और राजनैतिक जागृति उत्पन्न करना था।

इस प्रकार कुमाऊँ - गढ़वाल में सम्पन्न हुए राष्ट्रीय एवं जन आन्दोलनों में स्थानीय समाचार पत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अल्मोड़ा अखबार, शक्ति साप्ताहिक, स्वाधीन प्रजा और 'कर्मभूमि' में प्रकाशित ब्रिटिश कालीन लेखों से इस तथ्य का आभास होता है कि इन समाचार पत्रों पर उस काल में किसी प्रकार का प्रतिबन्ध (सेंसरशिप) नहीं था। यद्यपि उस काल में सरकार द्वारा कुछ समाचार पत्रों से जमानतें अवश्य मांगी गई तथापि जमानतें तब ही मांगी गई थी जबकि इन समाचार पत्रों ने स्थिति का वास्तविकता से कहीं अधिक वर्णन करना प्रारम्भ कर दिया था।

PTO

इन समाचार पत्रो मे देश मे घटित होने वाली प्रत्येक राजनैतिक घटना का उत्तेजनात्मक वर्णन तथा अंग्रेजो के अत्याचारो को बढ़ा चढ़ा कर प्रकाशित किया गया है। इसी प्रकार इन पत्रो में अनेक विद्रोहात्मक लेख दृष्टिगोचर होते हैं ऐसी स्थिति में भी इन पत्रो का प्रकाशन जारी रहना इस बात का परिचायक है कि समाचार पत्रों के प्रति ब्रिटिश सरकार ने उदार एवं स्वतन्त्र नीति अपनाई थी।

सेंसर शिप समाचार पत्रो के लिए वास्तविक रूप से धत्ताघोंटू कानून है। इससे जन साधारण को समाज तथा देश मे घटित घटनाओ का ज्ञान नही हो पाता है। साथ ही राजनीति मे तानाशाही की प्रवृति का विकास होता है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर
7579431731